इकाई 1. पं0 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय तथा संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पं0 अम्बिकादत्तव्यास का परिचय तथा संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 उपयोगी पुस्तकें

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

संस्कृत गद्य साहित्य शास्त्र से सम्बन्धित खण्ड एक की पहली इकाई है। इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि पं0 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय क्या है? पं0 अम्बिकादत्त व्यास ने अपनी सुरभारती को एक सुन्दर रमणी की भाँति अलंकार से सजाया है। अनुकूल एवं समुचित अलंकार का संयोजन किया है। बाण की कृति अलंकार के भार से बोझिल हुई प्रतीत होती है किन्तु व्यास की कृति विरलालंकार विभूषिता लावण्यमयी तन्वंगी के समान है। उन्होंने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का सावसर प्रयोग किया है। शब्दालंकार तो पदे – पदे दृष्टिगोचर होता है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- अम्बिकादत्त व्यास के परिचय के विषय में बतायेंगे ।
- शिवराजविजय के ऐतिहासिकता के विषय में समझायेगें ।
- शिवराजविजय काव्य के विषय में बता सकेगें ।
- शिवराजविजय के काव्य–अभिव्यंजना के विषय में अध्ययन करेगे।
- शिवराजविजय के भाषा शैली के विषय में अध्ययन करेगें।

1.3 पं0 अम्बिकादत्तव्यास का परिचय तथा संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय

पं0 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय

साहित्याचार्य पं0 अम्बिकादत्त व्यास ने 'शिवराजविजय' नामक गद्य–काव्य की रचना की, जो काशी से 1901 ई0 में प्रकाशित हुआ। व्यास जी का स्थितिकाल 1858–1900 ई0 था। इनके पूर्वज जयपुर राज्य के निवासी थे परन्तु इनके पितामह काशी में आकर बस गये थे। वहीं उनका अध्ययन सम्पन्न हुआ। 'बिहार–विहार' में उन्होंने 'संक्षिप्त निज वृतान्त' स्वयं लिखा है। मृत्यु के समय वे गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज पटना में प्रोफेसर थे। बिहार में ''संस्कृत संजीवनी समाज'' स्थापित कर उन्होंने संस्कृत शिक्षा प्रणाली का सुधार किया। व्यास जी ने छोटी–बड़ी मिलाकर संस्कृत और हिन्दी में कुल 75 पुस्तकें लिखी हैं।संस्कृत वाङ्मय के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास का सौभाग्य 'शिवराजविजय' को प्राप्त है। जो अनुपम वाक्य–विन्यास, अलंकरण एवं शब्दश्लेष की दृष्टि से कादम्बरी से प्रभावित–रूप शिल्प की दृष्टि से बंग उपन्यासों के निकट है। पं0 अम्बिकादत्त व्यास बाल्यकाल से ही प्रतिभाशाली थे। 10 वर्ष की अवस्था में ही काव्य–रचना प्रारम्भ कर दी थी। लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया और तैलंग अष्टावधान के 'सुकविरेषः' कहने पर भारतेन्दु जी ने ''काशीकविता वर्द्धिनी सभा'' की ओर से उन्हें 'सुकवि' की उपाधि प्रदान की।बाल विवाह की प्रथा के कारण तेरह वर्ष की अवस्था में व्यास जी का विवाह हो गया। इनके पिता दुर्गादत्त पौरोहित्य कर्म से जीविकोपार्जन करते थे, अतः आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त परिवार का भरण–पोषण साधारण रूप से ही हो पाता था। दूसरी ओर व्यास जी का पारिवारिक जीवन भी सुखमय नहीं था। असमय में माता–पिता का देहावसान हो गया। यौवन की चौखट पर पाँव रखते ही उनके छोटे भाई ने अपनी पत्नी के सिन्दूर साफ

कर दिये। इनकी छोटी बहन ने भी जीवन के वसन्तकाल में इनका साथ छोड़ दिया। इनके बड़े भाई इनसे द्वेष भाव रखते थे। इन अपार कष्टों, असीम वेदनाओं और अनेक मानसिक आघातों को भी अपने अन्तस् में समेट कर अपने कर्त्तव्य–पथ पर हिमाचल की तरह अडिग रहे। उन्होंने शिव के समान सारे अशिव आसव का पान करके भी समाज को 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का मिश्रित अमृत पिलाया।व्यास जी सं0 1937 में गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज से साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण करके 1940 में एक संस्कृत पाठशाला के प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करने लगे। कुछ दिन बाद वहाँ से त्याग–पत्र देकर मुजफ्फरपुर चले गये। जिला स्कूल के प्रधानपण्डित के पद पर कार्य करने लगे।व्यास जी अप्रतिम प्रतिभाशाली थे। वक्ता और साहित्य स्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहिता, संगीत और शतरंज में भी विशेष रुचि रखते थे। सितार, हारमोनियम, जल तरंग और मृदंग इनके प्रिय वाद्य थे। व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे। न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी। कविता कला में इतने प्रवीण थे कि एक घड़ी में सौ श्लोकों की रचना कर सकते थे। सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्‌भुत क्षमता थी। इसीलिये इन्हें ''शतावधान' तथा 'घटिका शतक' की उपाधि मिली थी।व्यास जी की लगभग 80 रचनाओं में 'शिवराजविजयम्' (उपन्यास), 'सामवतम्' (नाटक) गुप्ता–शुद्धि–प्रदर्शनम्, अबोधनिवारण तथा 'बिहारी विहार' (हिन्दी काव्य) प्रमुख थे।22 वर्ष की अवस्था में लिखा गया व्यास जी का 'सामवतम्' नाटक भाष्य, भाव और वर्ण्य की दृष्टि से अधिक उत्तम है। उसके विषय में डॉ0 भगवानदास ने लिखा है –''श्री अम्बिकादत्त व्यास जी का रचा 'सामवतम्' नामक नाटक दो बार पढ़ा। 'पुराणमित्येव हि साधु सर्वम्' ऐसा मानने वाले सज्जन प्रायः मेरे मत पर हँसेंगे तो भी मेरा मत यही है कि कालिदास रचित 'शकुन्तला' से किसी बात में कम नहीं है।''

''सामवत्तम्' नाटक को सं0 1945 में मिथिलेश्वर को समर्पित करने के बाद ही शिवराजविजय की रचना आरम्भ कर दी और सं0 1950 में उसे पूरा कर दिया। सं0 1952 में बिहारी के दोहों पर आधारित कुण्डलियों में रचित 'बिहारी विहार' की रचना के बाद हिन्दी जगत् के मूर्धन्य कवियों के चर्चा के विषय बन गये। अम्बिकादत्त व्यास की सर्वश्रेष्ठ कृति उनका शिवराजविजय है। शिवराजविजय संस्कृत–गद्य–साहित्य में अन्यतम स्थान रखता है। बाण, दण्डी और सुबन्धु के बाद व्यास जी का ही नाम आता है। यद्यपि अन्य बहुत से और भी गद्यकार हैं किन्तु साहित्यिक उत्कृष्टता, बौद्धिक प्रतिभा और सामाजिक आकलनों के वैशिष्ट्य के कारण व्यास जी प्रमुख गद्यकारों में परिगणित हैं। इस सबका अधिक श्रेय शिवराजविजय को है।दुःख का विषय है कि ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति दीर्घायु नहीं हो सका। बयालीस वर्ष की अवस्था में ही महाकवि का सम्मान प्राप्त कर व्यासजी सोमवार, मार्ग शीर्ष त्रयोदशी, सं0 1957 को अपने पीछे एक नववर्षीय पुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पंचतत्त्व को प्राप्त हो गये। किन्तु उनका यशःशरीर अजर और अमर है।

संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय

शिवराजविजय : शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है इसमें वर्णित कथा ऐतिहासिक हैं, किन्तु व्यास जी ने अपनी प्रतिभा और कल्पना के सहारे उसे उच्च कोटि की साहित्यिकता प्रदान कर दी है। कथा अधिकांश रूप में मौलिक होते हुये भी उसमें साहित्यिक कल्पना का समावेश है। इसमें कथा–वस्तु की संघटना प्राच्य और पाश्चात्य शिल्प के समन्वय से की गई है। यद्यपि इसमें दो स्वतन्त्र धाराएँ समानान्तर रूप से प्रवाहित होती हैं– एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीरसिंह हैं, तथापि एक–दूसरे से पूर्ण स्वतन्त्र और निरपेक्ष नहीं। एक–दूसरे के पूरक हैं। एक का महत्त्व

दूसरे से उद्भासित होता है। अतः दोनों परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। कथा में इतना प्रवाह और सम्प्रेषणीयता है कि पाठक की आकांक्षा उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती जाती है। शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा तीन निःश्वासों में समाहित है।

व्यास जी के शिवराजविजय में इतिहास और कल्पना, आदर्श और यथार्थ अनुभव और कल्पना का सुन्दर समन्वय है। उनके सभी पात्र अपने चरित्र निर्वाह में पूरी तरह से खरे उतरते हैं। वीर शिवाजी, गौरसिंह, रघुवीरसिंह, यशवन्तसिंह, अफजलखाँ, शाइस्तखाँ तथा ब्रह्मचारी आदि सदा अपनी स्वाभाविकता और यथार्थता का निर्वाह करते हैं। इसमें न कहीं अतिशयता है और न कहीं न्यूनता या अस्पष्टता।शिवराजविजय वीर रस प्रधान काव्य है तथापि उपकारी रूप में सभी रसों का चित्रण है। व्यास जी ने अलंकार–विधान में सदैव सजगता दिखाई है। यद्यपि इनका वर्णन कहीं पर अलंकृत नहीं है तथापि अनावश्यक अलंकारभार से बोझिल भी नहीं है।गद्यकारों में सर्वाधिक अलंकार–विधान बाण ने किया है। यदि इस क्षेत्र में उनके साथ व्यास जी को देखा जाय तो अन्तर यह दिखेगा कि इनकी कृति अनपेक्षित अलंकार–भार से बोझिल नहीं है।शिवराजविजय की शैली अत्यन्त सरल, सरस प्रवाहमयी है। भाषा की सरलता और भाव की उत्कृष्टता का समन्वय ही कवि की प्रमुख विशेषता होती है। कविकथ्य जितना ही सरल और सुन्दर ढंग से कहा जाय, काव्य उतना ही हृदयग्राही और 'सद्यः परिनिवृतये' की भावना को प्राप्त करने वाला होता है।अस्तु, 'शिवराजविजय' भाषा और भाव दोनों ही दृष्टि से एक उत्तम कोटि का काव्य कहा जा सकता है। इसमें प्रतिभा की प्रौढ़ता, कल्पना की सूक्ष्मता, अनुभव की गहनता, अभिव्यक्ति की स्पष्टता, भावों की यथार्थता और रमणीयता पदावलियों की मधुरता, कथानक की प्रवाहमयता, आदर्श की स्थापना, शिव की भावना और सुन्दर की सुन्दरता निहित है। उपन्यास की दृष्टि से भी कथानक, पात्र, घटना, संवाद, अन्तर्द्वन्द, आकांक्षा आदि तत्त्वों से पूर्ण है और 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' की कसौटी पर खरा उतरता है।

शिवराजविजय का काव्य शिल्प

भाषा शैली – मनोगत भावों को परहृदय संवेद्य बनाने का प्रमुख साधन भाषा है और भाषा की क्रमबद्धता या रचना–विधान को ही सम्भवतः शैली भी कहा जाता है। अतः सामान्यतः 'भाषा–शैली' से ऐसा प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इस आधार के साथ यह कहा जा सका है कि काव्य में मनोगत भावों को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रमुख एवं सहज साधन 'शैली' है। 'शब्दार्थौ सहितो काव्यम्' के परिप्रेक्ष्य में यदि अर्थ काव्य की आत्मा है तो शब्द अर्थात् शैली काव्य का शरीर। अतः भाव की मनोहरता, स्थिरता और सूक्ष्मता शैली पर ही निर्भर होती है। डॉ0 श्यामसुन्दर दास के अनुसार किसी कवि या लेखक की शब्द –योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, उसकी बनावट और ध्वनि आदि का नाम ही शैली है। दण्डी के काव्यादर्श में – 'अस्त्यनेको गिराममार्गः सूक्ष्मभेदपरस्परम्' कहा है। इन भावनाओं के अनुसार स्थूलतः शैली के दो भेद किये जाते हैं – (1) समास शैली (2) व्यास शैली। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के आधार पर आजकल विद्वानों ने मार्ग (शैली) को चार प्रकार का माना है। किन्तु अनन्तर काल में इन्हें शैली न कहकर रीतियाँ कहा जाने लगा है। ये रीतियाँ चार हैं– (1) वैदर्भी, (2) गौणी, (3) पांचाली, और (4) लाटी।

(1) कोमल वर्णों और असमानता अथवा अल्पसमासा, माधुर्यपूर्ण रचना वैदर्भी रीति है।
(2) महाप्राण–घोषवर्णा, ओजगुणसम्पन्ना तथा समास बहुला रचना गौणी है।
(3) वैदर्भी और गौणी का सम्मिश्रण पांचाली रीति है।
(4) वैदर्भी और पांचाली का सम्मिश्रण लाटी रीति है।

शिवराजविजय की भाषा सरल, सुबोध एवं स्पष्ट है। पदावलियों के प्रयोग वर्ण्य–विषय के अनुसार होने चाहिये। एक ही विधा प्रत्येक वर्णन को प्रभावमय नहीं बना सकती और व्यास जी ने ऐसा ही किया है। अतः कहा जा सकता है कि शिवराजविजय में उचित शब्दावलियों का प्रयोग, अर्थपूर्ण वाक्यविन्यास तथा अवसर के अनुकूल कोमल तथा कठोर वर्णों का प्रयोग किया गया है। व्यास जी ने अवसर के अनुकूल एक ओर दीर्घ समास बहुला पदावली का प्रयोग किया है। तो दूसरी ओर सरल लघु पदावली का। पूर्वोक्त रीतियों सन्दर्भ में शिवराजविजय में व्यास जी ने पांचाली रीति का आश्रय लिया है। इनके साक्ष्य में तथ्य द्रष्टव्य हैं– अफजल खाँ के शिविर का वर्णन करते हुए व्यास जी समस्त (दीर्घ) पदावली में कहते हैं– ''**इतस्तु स्वतन्त्र यवनकुल–भुज्यमान–विजयपुराधीश–प्रेषितः पुण्यनगरस्य समीपे एव प्रक्षालित–गण्डशैल–मण्डलायाःनिर्झरवारिधारा–पूर–पूरित–प्रबलप्रबाह्यायाः,पश्चिम–पारावार –प्रान्तं–प्रसूत–गिरि–ग्राम–गुहा–गर्भ–निर्गताया अपि प्राच्य–पयोनिधि–चुम्बन–चंचुरायाः, रिंगत्–तरंग–भंगोद्भूतावर्त्तशत–भीमायाः भीमायानद्याः,अनवरत–निपतद्–वकुलकुल–कुसुम–कदम्ब–सुरभीकृतमपिनीरंवगाह्यमान–मन –मतंगज–मद–धाराभिःकटूकुर्वन्';हय–हेषा–ध्वनि–प्रतिध्वनि–वधिरीकृत–गव्यूति–मध्यगाध्व नीनवर्गः,पटं–कुटीर–कूटविहिन–शारदाम्भोधर–विडम्बनः निरपराध :–भारताभिजन–जन–पीडन–पातक–पटलैरिव समुद्धूयमाननोलध्वजैः रूपलक्षितः .... ।**''दूसरी ओर व्यास जी की लघुसमास शैली भी अत्यन्त भावपूर्ण और मार्मिक है। उसमें अभिवक्त की स्पष्टता और सूक्ष्मता निहित है–''**एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभागस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य अवलम्बो रोलकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य।**''

व्यास जी की इस रचना में समासरहित सुन्दर पदावलियों का प्रयोग भी अत्यन्त हृद्य है–

''**वटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षवर्षीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुविशाललोचनश्चासीत्**।''

अम्बिकादत्त व्यास विद्वान् थे, भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था और भावाभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता थी। भाव के अनुकूल भाषा का संयोजन करने का ध्यान सदैव रखते थे। जैसा कोमल या कठोर भाव का वर्णन करना होता था उसी के अनुसार भाषा संयोजन करते थे। शान्त, स्निग्ध एवं नीरव–निशा का वर्णन देखिये–

''**धीरसमीरस्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनी–कामिनी चन्दनविन्दौ इव इन्दौ, कौमुदीकपटेन सुधाधारमिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्ता शुश्रूषु इव मौनमाकलयत्सु पतंगकुलेषु कैरवविकाशहर्षप्रकाशमुखरेषु चंचरीकेषु।**''

भावों की सरल एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिये उनकी भाषा द्रष्टव्य है–

''**क्वचिद् हरिद्रा हरिद्रा, लशुनं लशुनम्, मरिचं मरिचम्, चुक्रम् चुक्रम्, वितुन्नकं वितुन्नकम्, श्रृंगवेरं श्रृंगवेरम्, रामहं रामहम्, मत्स्यण्डी, मत्स्यण्डी, मत्स्या मत्स्याः, कुक्कुटाण्डं कुक्कुटाण्डम् पललं पललमिति –**''

अस्तु, इस कृति के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने भाषा और शैली का प्रयोग भाव के अनुसार ही किया है। यत्र–तत्र व्याकरणिक शब्दों का भी प्रयोग उनकी विद्वत्ता की ओर संकेत करता है। सन्नत, यङन्त यङलुङन्त शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा–शैली उनके काव्य को उत्कृष्टता प्रदान करने में पूर्णतः उपजीव्य है।

अलंकार योजना – कविताकामिनी का श्रृगांर है, अलंकार योजना। जिस प्रकार

आभूषण से नारी का सौन्दर्य बढ़ जाता है उसी प्रकार अलंकार से काव्य का भी

चमत्कार एवं हृदय–संवेद्यता बढ़ जाती है। अनलंकृत भाषा एवं रमणी दोनों चित्ताकर्षक नहीं होते। कुछ अर्थालंकार तो इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि उनके विधान से काव्य के सर्वस्व वे ही प्रतीत होने लगते हैं। इसी कारण तो कुछ अलंकारवादियों ने अलंकार को ही काव्य की आत्मा मानना प्रारम्भ कर दिया। कुछ भी हो काव्य में अलंकार का स्थान महत्त्वपूर्ण है। अलंकार के अभाव में काव्य अपनी पूर्णता को प्राप्त करने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकता।पं0 अम्बिकादत्त व्यास ने अपनी सुरभारती को एक सुन्दर रमणी की भाँति अलंकार से सजाया है। अनुकूल एवं समुचित अलंकार का संयोजन किया है। बाण की कृति अलंकार के भार से बोझिल हुई प्रतीत होती है किन्तु व्यास की कृति विरलालंकार विभूषिता लावण्यमयी तन्वंगी के समान है। उन्होंने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का सावसर प्रयोग किया है। शब्दालंकार तो पदे–पदे दृष्टिगोचर होता है। अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

'भामिनी–भ्रु भंगभूरिभाव प्रभाव–पराभूतवैभवेषु भटेषु''

''चंचचन्द्रहास–चमत्कार–चाकचक्यचिल्लीभूत–चक्षुषका''।

यत्र–तत्र यमक का भी प्रयोग किया है –

''सेयं वर्णेन सुवर्णम्, कलरवेणं पुंस्कोकिलान्, केशैरोलम्बकदम्बान्, ललाटेन कलाधरकलाम् लोचनाभ्याम् खंजनान्, अधरेण बन्धुजीवम्, हासेन ज्योत्स्नाम्''।

व्यास जी ने परम्परा से हटकर नये उपमानों का भी प्रयोग किया है, **''विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः सकलकालनः करालः कालः।''**

कवि की कल्पना का बहुत बड़ा सम्बल है– उत्प्रेक्षा अलंकार। बाण की तरह व्यास जी ने भी उत्प्रेक्षा की पर्याप्त संयोजना की है। एक मालोत्प्रेक्षा का उदाहरण द्रष्टव्य है –

''गगनसागरमीने इव, मनोजमनोज्ञहंसे इव, विरहिनिवकृन्तेन रौप्यकुन्त प्रान्ते इव, पुण्डरीकाक्षपत्नीकरपुण्डरीकपत्रे इव, शारदाभ्रसारे इव सप्तसप्ति सप्तिपादच्युते राजतखुरत्रे इव मनोहरतामहिला ललाटे इव, कन्दर्पकीर्तिलतांकरे इव, प्रजाजननयनकर्पूरखण्डे इव, तमीतिमिरकर्तनशाणोल्लीढनिर्स्त्रिशे इव च समुदिते चेत्रखण्डे''।

उपमा अलंकारों में प्रमुख माना जाता है क्योंकि उपमा एक प्रकार से वक्तव्य के कहने का ढंग है, जिसका व्यवहार सर्वाधिक होता है। साधर्म्य अलंकारों की माला में उपमा 'सुमेरु' है। उपमा का प्रयोग भी व्यास जी जैसा कि संस्कृत कवियों में प्रायः नहीं देखा जाता है। कवि ने नौका की उपमा एक कुम्भड़े की फांक से देते हुए लिखा है – ''कुष्माण्डफक्किकारया नौकया'' ।विरोधाभास व्यास जी का प्रिय अलंकार है। विरोधाभास के चित्रण में कवि, बाण की समानता करता हुआ दिखाई पड़ता है। शिवाजी के वर्णन में विरोधाभास की छटा बरवश पाठकों को आकृष्ट करती है–

खर्वामप्यखर्वपरिक्रमाम् श्याममपि यशः समूहश्वेतीकृत त्रिभुवनाम्, कुशासनर्वश्रयामपि सुशासनाश्रयाम्, पठनपाठनादि परिश्रमानभिज्ञामपि नीतिनिष्णाताम् स्थूलदर्शनामपि सूक्ष्मदर्शनाम्, ध्वंकाण्ड व्यसनिनीमपि धर्मधौरेयीम्, कठिनामपि कोमलाम्, उग्रामपि शान्ताम् शोभितविग्रहामपि दृढसन्धिबन्धाम्, कलितगौरवामपि कलितलाघवाम्....।''

चित्तौड़गढ़ की स्त्रियों के वर्णन में श्लेष गर्भित विरोधाभास द्वारा अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया गया है – 'क्षत्रियकुलांगनाः कमला इव कमलाः, शारदा इव विशारदा, अनुसूयाइवानुसूयाः, यशोदा इव यशोदाः, सत्या इव सत्याः, रुक्मिण्ड इव रुक्मिण्यः सुवर्णा इव सुवर्णाः, सत्य इव सत्यः।''इसके अतिरिक्त दीपक, श्लेष उदात्त, यथासंख्य आदि

अलंकारों की भी योजना की है। डॉ0 भगवानदास कादम्बरी से तुलना करते हुए लिखते हैं – ''जहाँ वासवदत्ता और कादम्बरी के शब्दों की अरण्यानी में बेचारा अर्थ पथिक सर्वथा मूल भटक कर खोजता है; उसका पता नहीं लगता, वहाँ शिवराजविजय के सुललित उद्यान में, उसकी सहज अलंकृत शैली में पाठक का मन खूब रमता है कादम्बरी के शब्दों की अरण्यानी में बेचारा अर्थपथिक सर्वथा भूल भटक कर खोजता है; उसका पता नहीं लगता, वह शिवराजविजय के सुललित उद्यान में, उसकी सहज अलंकृत शैली में पाठक का मन खूब रमता है कादम्बरी के शब्दों की विकट अरण्यानी की तरह शिवराजविजय के शब्दसंसार को देखकर उसका मन घबरा नहीं उठता अपितु उसमें प्रविष्ट होकर उसके आनन्द को लेने की उत्सुकता को जगाता है।''अस्तु, व्यास जी ने अलंकारों का प्रयोग मात्र कविताकामिनी को सजाने के लिये ही किया है।

रस–योजना – 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के अनुसार रस ही काव्य को आत्मा है। यह सच भी है कि 'रसहीन' काव्य नहीं हो सकता है। अतः काव्य में रसयोजना होती ही है। यद्यपि रसों में उच्चावचता या श्रेणी विभाग नहीं होता है तथापि वर्ण्य की दृष्टि से रस की मुख्यता या गौणता अवश्य होती है। शिवराजविजय का प्रधान रस है 'वीर'। प्रायः अन्य अभी रस इसमें उपकारी रूप में निहित हैं। उद्देश्य के अनुसार इसमें वीर रस का विशेष रूप से चित्रण किया है। शिवाजी के शौर्य का जो अद्भुत वर्णन किया गया है वह अत्यन्त स्पृहणीय है। गौरसिंह अफजलखाँ से कहता है –

''को नामापरः शिववीरात् ? स एव राजनीतौ निष्णातः, स एव सैन्धवारोहविद्यासिन्धुः, स एव चन्द्रहासंचालनेचतुरः, स एव मल्लाविद्यामर्मज्ञः, स एव वाणविद्यावारिधिः' स एव वीरवारवरः पुरुषपौरुषपरीक्षकः, स एव दीनदुखदावदहनः, स एव स्वधर्मरक्षणसक्षणः।''आगत एष शिववीरः इति भ्रमेणापि सम्भाव्य अस्त विरोधिषु 'केचन मूर्च्छिताः निपतन्ति, अन्ये विस्मृतशास्त्रास्त्राः पलायन्ते, इतरे महात्रासाकुंचितोदरा विशिथिलवाससो नग्ना भवन्ति, अपरे च शुष्कमुखा दशनेषु तृणं सन्धाय साम्रेडं प्रणिपातपरम्परां रचयन्तो जीवन याचन्ते। व्यास जी ने यत्र–तत्र श्रृगांर रस का भी चित्रण किया है। इन्होंने श्रृगांर का वर्णन अत्यन्त शिष्ट और सात्त्विक रूप में किया है, उसमें मादकता या उच्छृँखलता लेशमात्र की नहीं है –

''सा चावलोक्य तमेव पूर्वावलोकितं युवानम्, वीराभरमन्थरापि ताताज्ञया बलादिवप्रेरिता ग्रीवां नमयन्ती' आत्मनाऽऽत्मन्येव निविशमाना स्वपादाग्रमेवा लोकयन्ती मोदकभाजनसमाजितं सव्येतरं करं तदग्रेप्रसारयत्। .... पुनश्च सा अंचलकोणं कटिकच्छप्रान्ते आयोज्य, हस्ताभ्यां मालिकां विस्तार्यं नतकन्धरस्य रघुवीरसिंहस्य ग्रीवायां चिक्षेप इषत्कम्पितगात्रयष्टिश्च शनैर्यथा निववृते।

कहीं–कहीं करूण रस का अत्यन्त ह्रदयग्राही वर्णन किया गया है –

''माता च तव ततोऽपि पूर्वमेव कथावशेषा संवृत्ता, यमलौ भ्रातरौ च तब द्वादशवर्षदेशीयावेव आखेट व्यसनिनौ महार्हभूषणभूषितौ तुरगावरुह्य वनं गतौ दस्युभिरपहृतौ इति न श्रूयते तयोर्वार्ताऽपि, त्वं तु मम यजमानतस्य पुत्रीति स्वपुत्रीवमयैव सह नीता वर्द्धयसे च। अहह! .... बारंबारम् बालेव सुन्दरकान्याविक्रय व्यसनिभिर्यवनवराकैरपह्रियसे।

व्यास जी ने एकत्र वात्सल्य रस का भी अत्यन्त ह्रदयग्राही वर्णन किया है। डाकुओं के चंगुल में फंसे हुए गौरसिंह और श्यामसिंह अपनी भगिनी के विषय में सोचते हैं –

''हन्त ! हत भाग्या सा बालिका, या अस्मिन्नेय वयसि पितृभ्यां परित्यक्ता, आवयवोरपि अदर्शनेन क्रन्दनैः कण्ठं कदर्थयति। अहह! सततमस्मक्रोडैकक्रीडनिकाम्, सततमस्मन्मुखचन्द्रचकोरीम्, सततमस्मत् कण्ठरत्नमालाम् सततमस्मन्सह भोजीम् .....''इस प्रकार पं0 अम्बिकादत्त व्यास के द्वारा रसों की योजना अत्यन्त परिपक्व और साधिकार

है, मुख्यतः वीररस का चित्रण करते समय इसमें सभी रस वर्णन यत्किंचिद् रूप में उपलब्ध होते हैं।

काव्य –अभिव्यंजना

वस्तु एवं प्रकृति–चित्रण – काव्य में अभिव्यंजना का महत्त्व शिल्प की अपेक्षा अधिक होता है हृदयग्राही मार्मिक भावों की अभिव्यंजना ही काव्य की सफलता है। वस्तुघटना, भाव या दृश्य का यथातथ्येन वर्णन करना ही कवि की विशेषता है। इसमें अम्बिकादत्त व्यास अत्यन्त निपुण और बहुमुखी है। संस्कृत कवियों में प्रकृति–वर्णन की परम्परा रही है। जितनी सफलता के साथ प्रकृति का चित्रण जिस कवि ने किया है, वह उतना ही अधिक सफल हुआ है। व्यास जी ने भी शिवराजविजय में प्रकृति नटी का सुन्दर अंकन किया है। यह अवश्य है कि वे कठोर प्रकृति की अपेक्षा कोमल प्रकृति के चित्रण में अधिक समर्थ सिद्ध हुए हैं। प्रकृति के कठोर रूप का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''सुन्दरमस्मात्थानात् कोङ्कण देशः। मध्ये च विकटा अटव्य शतशः शैलश्रेणयः त्वरित धारा धुन्यः, पदे–पदे च भयानकभल्लूकानाम्बूकृत–संकलानाम्, मुस्तमूलोत्खननघुर्घुर्घोषित–घोर–घोणानाम्, घोणिनाम्, पंकपरिवर्तोन्मथितकासाराणां, नरमांसं बुभुक्षूणां तरक्षणाम्, विकटकरटिकटविपाटन–पाटव–पूरितसहनानां सिंहानाम्, नासाग्र–विषाणशोणनच्छलविहिन–गण्डरौल–खण्डाना खंगिनाम् दोदुल्यमान–द्विरेफ–दल पेपीयमान–दानधारा–धरन्धराणां–सिन्धुराणां।''

इस प्रकार व्यास जी प्रकृति के कठोर रूप के वर्णन में तो उतने सक्षम नहीं हो पाये हैं, किन्तु प्रकृति के मनोरम पक्ष के वर्णन में अत्यन्त सफल हुए हैं। सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त एवम् रात्रि आदि के वर्णन में व्यास जी ने अत्यन्त कुशलता का परिचय दिया है। सूर्यास्त का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

जगतः प्रभाजालमाकृष्य, कमलानि–सम्मुद्रय, कोकान् सशोकीकृत्य, सकलचराचरचक्षुः संचारशक्तिं शिथिलीकृत्य, कुण्डलेनेव निज मण्डलेन पश्चिममाशां भूषयन्, वारुणी सेवनेनेव मांजिष्ठमांजिम रंजितः, अनवरत भ्रमणपरिश्रमश्रान्त इव सुषुप्सुः, म्लेच्छगणदुराचारदुःखाऽऽक्रान्त–वसुमतीवेदनामिव समुद्रशायिनि निविवेदयिषुः, वैदिक–धर्म–ध्वंस–दर्शन–संजात निर्वेदः इव गिरिगहनेषु प्रविश्य तपश्चिकीर्षुः, धर्म–ताप–तप्त इव समुद्रजले सिस्नाषुः, सायं समयमवगत्य सन्ध्योपासनमिवविधित्सुः, ...अन्धतमसे च जगत् पातयन्, चाक्षुषामगोचर एव संजात।''

आश्रम की शोभा का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

''कदलीदलकुंजायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परमपवित्रपानीयं परस्सहस्रपुण्डरीकपटलपरिलसितं पतत्रिकुलकूजितपूजितं पयः पूरः–पूरितसर आसीत्। दक्षिणतश्चैको निर्झरझर्झर–ध्वनि–ध्वनित–दिगन्तरःफलपटलाऽऽस्वादचपलित–चंचुपतंगकुलाऽऽक्रमणाधिकविनतशाखशाखिसमूहव्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।।''

व्यास जी ने रात्रि की नीरवता का अत्यन्त सटीक और स्वाभाविक वर्णन किया है। नीरव निशा का चित्र खींचते हुए लिखते हैं –

''धीरसमीरस्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्पमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनीकामिनीचन्दनविन्दौ इव इन्दौ, कौमुदीकपटेन सुधाधारामिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्तां शुश्रूषुषु इव मौनमाकालयत्सु पतंगकुलेषु, कैरव–विकाश–हर्ष–प्रकाश–मुखरेषु चंचरीकेषु।''

झंझावात का भी चित्रण इतनी सफलता के साथ किया है कि उन्हें पढ़कर आँधी की वास्तविकता उसके नेत्रों के सामने उपस्थित हो उठती है। उसका भयानक दृश्य व्यास जी के शब्दों में देखिये –

तावदकस्मादुत्थितो महान् झंझावातः, एकः सायं समयप्रयुक्तः स्वभाववृत्तोऽन्धकारः, स च द्विगुणितो मेघमालाभिः झंझावातोद्धूतैः रेणुभिः शीर्णपत्रैः कुसुमपरागैः शुष्कपुष्पैश्च। पुनरेष द्वैगुण्यं प्राप्तः। इह पर्वतश्रेणीतः पर्वतश्रेणीः, वनाद् वनानि, शिखराच्छिखराणि, प्रपातात् प्रपाताः अधित्यकातोऽधित्यकाः, उपत्यकात् उपत्यकाः, न कोऽपि सरलोमार्गः, नानुद्वेदिनी भूमिः, पन्था अपि च नावलोक्यते। ....पदे–पदे दोधूयमाना वृक्षशाखाः सम्मुखमाध्नन्ति। परितः सहडहडाशब्दं दोधूयमानानां परस्सहस्रवृक्षाणां, वाताघात संजात पाषाण पातानां प्रपातानाम्, महान्ध तमसेन ग्रस्यमान इव सत्वानां क्रन्दनस्य च भयानकेन–स्वनेन कवली कृतमिव गगनतलम्।''

इस प्रकार व्यास जी प्रकृति–चित्रण के साथ अन्य वस्तुओं के वर्णन में सचेष्ट रहे हैं। छाया–चित्र उपस्थित करने में भी व्यास जी ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। आजकल के शिविर का वर्णन व्यास जी के शब्दों में इस प्रकार है–

''आत्मनः कुमारस्यापि च केशान् प्रसाधनिकया प्रसाध्य, मुखमार्द्रपटेन प्रोंछ ललाटे सिन्दूरबिन्दुतिलकं विरचय्य, उष्णीषिकामपहाय, शिरशि सूचिरयूतांसौवर्णकुसुमलतादिचित्रविचित्रतामुष्णीषिकां संधार्यशरीरे हरितकौशेयकंचुकिकामायोज्य, पादयोः शोणपट्टनिर्मितमधोवसनमाकलय्य, दिल्लीनिर्मितेमहार्हे उपानाहौ धारयित्वा, लघीयसीं तानपूरिकामेकां सहनेतुं सहचरहस्ते समर्प्य ....''

पूर्वी बंगाल के वर्णन को पढ़कर पाठक ऐसा अनुभव करता है, जैसे वह नदी के तट पर खड़ा हुआ सारा दृश्य अपनी आँखों से देख रहा है –

''पूर्ववंगमपि सम्यगवालुलोकदेष जनः। यत्र प्रान्तप्ररूढां पद्मावलीं परिमर्दयन्तीपद्मेव द्रवीभूता पयःपूरप्रवाहपरम्पराभिः पद्मा प्रवहति 'यत्र ब्रह्मपुत्र इव शत्रुसेनानाशनकुशलाः ब्रह्मदेशं विभजन् ब्रह्मपुत्रो नाम नदो भूभागं क्षालयति। यत्र साम्लसुमधुररसपूरितानि फूत्कारोद्धूतभूतिज्वलदंगारविजित्वरर्णानि जगत्प्रसिद्धानि नारांगाण्युद्भवन्ति, यद्देशीयानां जम्बीराणां रसालानां तालनारिकेलानां खर्जूराणां च महिमा सर्वदेशरसज्ञानां साम्रेडं कर्ण स्पृशति, यत्र भयंकराऽऽवर्त सहस्राऽऽकुलासुस्रोतस्वतीषु सहोहोकारं क्षेपणीः क्षिपन्तः अरित्रं चालयन्तः, वडिशं योजयन्तः कुवेणीस्थाम्रियमाणा मत्स्यपरीवर्तानालोकमालोकमानन्दतः,............।''

सुन्दर सरोवर के किनारे दर्भासन पर बैठे सविधि पूजन करने वाले मुनिजनों का अतीव हृदयहारी चित्रण व्यास जी ने किया है –

''तत्र वरटाभिरनुगम्यमानानां राजहंसानां पक्षतिकण्डूतिकषणचंचलचुंपुटानां मल्लिकाक्षाणां, लक्ष्मणाकण्ठस्पर्शहर्षवर्षप्रफुल्लांगरुहाणां सारसानां, भ्रमद्भ्रमरझंकारभारविद्रावितवितनिद्राणां कारण्डवनां च तास्ताः शोभाः पश्यन्तौ, तडाग तट एव पम्फुल्यमानानां मकरन्दतुन्दिलानामिन्दीवराणां समीपत एवमसृणपाषाणपट्टिकासु कुशासनानिमृगचमसिनानि उर्णासनानि च विस्तीर्योपविष्टानां........।''

इस प्रकार व्यास जी ने शिवराजविजय में जिसका वर्णन किया है उसका यथारूप में चित्र खींचकर पाठक को भावविभोर कर दिया है। वस्तु या दृश्य वर्णन की कुशलता व्यास जी में कूट–कूटकर भरी है। वस्तु वर्णन में व्यास जी अपने पूर्ववर्ती गद्य कवियों की पंक्ति में विराजमन होते हैं।

सामाजिक चित्रण – संस्कृत गद्य काव्य में गद्य की अनेक विधाएँ निहित है और विविध भावों के वर्णन का भी समन्वय है। किन्तु शिवराजविजय के पूर्व जिन आख्यानों या कथाओं का वर्णन मिलता है, वे या तो चरित्र प्रधान हैं या दृश्य (बिम्ब) प्रधान। शिवराजविजय एकमात्र ऐसा उपन्यास है जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों और चरित्रों का समग्र रूप से वर्णन किया गया है। 'साहित्य समाज का दर्पण होता है'

शिवराजविजय इस कथन की कसौटी पर खरा उतरता है।

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने शिवराजविजय में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है। उस समय राजा अकर्मण्य, विलासी और विद्वेषी थे। हिन्दु जाति मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित थी। दूसरी ओर मुसलमानों का साम्राज्य भारत में निरन्तर बढ़ता जा रहा था और उसके साथ–साथ ही मुसलमानों के द्वारा हिन्दु कन्याओं का अपहरण और मूर्तियों के विध्वंस, पवित्र धर्म–ग्रन्थों के विनाश और अनाथ हिन्दुओं के प्रपीडन को अपना कर्त्तव्य समझते थे। हिन्दु राजा मुसलमान शासकों की दासता स्वीकार कर उनकी प्रशंसा में रत थे और उनकी कृपा पर जीवित थे।

ऐसी विषय परिस्थिति में महाराष्ट्राधीश्वर वीर शिवाजी ने अपने शौर्य पराक्रम और सदाचरण द्वारा हिन्दु जनता और हिन्दुत्व की रक्षा की तथा हिन्दुओं के अस्तंगत शौर्य को बड़ी कुशलता और वीरता से पुनर्जागृत किया। उन्होंने देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति आत्मविश्वास, स्वधर्मानुराग एवम् मातृभूमि की सेवा भाव का हिन्दु जनता में संचार किया।

अति अनीति की पराजय सर्वदा होती है। जिस विलासिता और व्यसन के कारण हिन्दु राजाओं का पतन हुआ उसी विलास और भोगप्राचुर्य को कारण मुस्लिम शासकों का भी पराभव हुआ। हिन्दुओं पर उनका अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। उनके अत्याचारों का वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं –

''.....क्वचिद्दारा अपह्रियते, क्वचिद्धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्तनादाः, क्वचिद्रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद्गृहनिपातः, श्रूयते अवलोक्यते च परितः।''

मुसलमान शासक इतने मदान्वित और विलासी प्रवृति के हो चुके थे कि अफजल खाँ भी वीर शिवाजी जैसे शक्तिशाली और सर्वसमर्थ राजा को पराजित करने की प्रतिज्ञा विजयपुर नरेश के सामने करके आया था, सदैव भोग–विलास और नशे में चूर रहता था। जिसका वर्णन करते हुय व्यास जी कहते हैं –

''स प्रौढ़ि विजयपुराधीश महासभायां प्रतिज्ञाय समायातोऽपि शिवप्रतापं च विदन्नपि अद्य नृत्यम्, अद्य गानम्, अद्य लास्यम्, अद्य मद्यम्, अद्य वारांगना, अद्य भ्रुकंसकः अद्य वीणावादनम् इति स्वच्छनदैरुच्छश्रृंखलाचरणैर्दिनानि गमयति।।''

इसी का परिणाम था कि गायक (गौरसिंह) के समक्ष अफजल खाँ सगर्व अपनी भावी गोप्य योजना (शिववीर को सन्धिव्याज से पकड़ने) की घोषणा स्पष्ट रूप से कर देता है। इस प्रकार तत्कालीन मुस्लिम राजाओं में उसी वृत्ति का संचार हो रहा था जिसके कारण हिन्दु राजाओं की पराजय हुई थी। उस समय हिन्दु राजाओं में आपसी वैरभाव बढ़ा हुआ था, वेश्याओं और मदिरा के चक्कर में अपनी सम्पत्ति नष्ट कर चुके थे, मिथ्या प्रशंसा करने वाले चाटुकारों को ही सबसे निकट और हितैषी समझते थे और स्वार्थ की वृत्ति सर्वोपरि हो चुकी थी। इसी कारण तो भारतवर्ष सैकड़ों वर्ष तक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा रहा। इसका वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं।

''शनैःशनैःपारस्परिक–विरोध–विशिथिलीकृत–स्नेहबन्धनेषुराजसु,भामिनी–भ्रूभंग–भूरि भाव–प्रभाव–पराभूतवैभवेषु भटेषु, स्वार्थचिन्तासन्तान वितानैकतानेषु अमात्यवर्गेषु प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु''। ''इन्द्रस्त्वं कुवेरस्त्वं वरूणस्त्वमिति वर्णनमात्रसक्तेषु।''

किन्तु महाराष्ट्राधीश्वर, वीर शिवाजी उन हिन्दु राजाओं में अपवाद रूप थे; न तो उनमें उक्त प्रकार की कमजोरी थी और न ही स्वार्थ लिप्सा। वे एक वीर, पराक्रमी, राजनीति पारंगत एवं कुशल प्रशासक थे। उनकी क्षमता व्यूहरचना, ओजस्विता एवं धीरता अपूर्व थी। इसी कारण विशाल सेना वाले मुस्लिम शासक के विरूद्ध उन्होंने विजय प्राप्त की। उनके गुप्तचर गौरसिंह आदि तथा द्वारपाल के चरित्र एवं कार्यों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं। गौरसिंह अपनी गुप्तचरीय व्यूहरचना का वर्णन करते हुए कहता है –

''भगवन् ! सर्वं सुसिद्धम्, प्रतिगव्यूत्यन्तरालमंगीकृतसनातनधर्मरक्षामहाव्रतानां

धारितमुनिवेषणां वीरवराणामाश्रमाः सन्ति। प्रत्याश्रमंच वलीकेषु गोपयित्वा स्थापिताः परश्शताः खड्गाः, पटलेषु तिरोभाविता शक्तयः कुशपुंजान्तः स्थापिताः भुशुण्डयश्च समुल्लसन्ति। उंछस्य शिलस्य, समिदाहरणस्य, इङ्गुदीपर्यन्वेषणस्य, भूर्जपत्र परिमार्गणस्य, कुसुमावाचयनस्यः तीर्थटनस्य सत्संगस्य च व्याजेन केचन जटिलाः, पेर मुण्डिनः इतरे काषायिणः, अन्ये मौनिनः, अपरे ब्रह्मचारिणश्च बहवः पटवो वटवश्चराः, संचरन्ति। विजयपुरादुड्डीयात्रागच्छत्या मक्षिकाया अप्यन्तः स्थितं वयं विद्मः, किं नाम एषां यवनहतकानाम्।'

वीर शिवाजी सदैव योग्य और विश्वस्त व्यक्ति को ही गुप्तचर के रूप में नियुक्त करते थे। गुप्तचर की निपुणता, कार्यक्षमता, विश्वसनीयता और गम्भीरता आदि की परीक्षा लेने के बाद ही राजपक्ष के लोग गुप्तचरों को रहस्य की बातें बताते थे, केवल गुप्तचर होने मात्र से न तो उनकी सन्तुष्टि हो पाती थी और न ही वे उन्हें गुप्त सन्देशों के कहने योग्य समझते थे। तोरण दुर्ग का अध्यक्ष शिवाजी के गुप्तचर की परीक्षा लेकर ही उसे रहस्य की बात बताने के लिये तैयार होता है –

''नैतेषु विषयेषु कदापि सतन्द्रोऽवतिष्ठते महाराजः, स सदा योग्यमेव जनं पदेषु नियुनक्ति, नूनं बालोप्येषोऽबालहृदयोऽस्ति, तदस्मै कथयिष्याम्यखिलं वृत्तान्तम्, पत्रं च केषूचिद् विषयेषु समर्पयिषामि।''

गौरसिंह गुप्तचर का कार्य करते हुये कभी ब्रह्मचारी बनता है तो कभी संन्यासी; कभी गायक बनता है तो कभी उत्कट योद्धा। और सर्वत्र अपना कार्य बड़ी कुशलता से करता है। दूसरी ओर शिवाजी के द्वारा नियुक्त सभी कर्मचारी अपना कार्य अत्यन्त निष्ठा–विश्वास और स्वामिहित भावना से करते थे। वे किसी के बहकावे या उत्कोच आदि के प्रलोभन में नहीं आते थे। स्वामी की आज्ञा के सामने ब्रह्मा तक के आदेश मानने को तैयार नहीं होते थे। स्वामी का आदेश ही उनके लिये ब्रह्मा का आदेश होता था। इसी प्रकार के आचरण की एक द्वारपाल की उक्ति द्रष्टव्य है –

सन्यासिन् ! सन्यासिन् !! बहूक्तम्, विरम, न वयं दौवारिका ब्रह्माणोप्याज्ञां प्रतीक्षामहे। किन्तु यो वैदिक धर्म रक्षाव्रती, यश्च सन्यासिनां ब्रह्मचारिणां तपस्विनांच, संन्यासस्य ब्रह्मचर्यस्य तपसश्चाप्तरायाणां हन्ता, येन च वीरप्रसविनीयमुच्यते कोंकणदेशभूमिः तस्यैव महाराजशिववीरस्याऽऽज्ञां वयं शिरशा वहामः।''

महाराज शिवाजी एक स्वाभिमानी शासक थे। अपने शत्रु मुगल शासकों से सन्धि करना या उनकी अधीनता स्वीकार करना उन्हें स्वीकार न था। इस स्थिति में शत्रुओं से रक्षा एक मात्र उपाय युद्ध ही था। शत्रु से सन्धि करने की अपेक्षा अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देना वे कहीं अधिक श्रेयष्कर समझते थे। अपने इन विचारों पर सदैव दृढ़ रहे। शिवाजी के हृदय में यवनों से प्रतिशोध लेने की भावना कितनी प्रबल थी इसका एक सुन्दर उदाहरण देखिये –

''ये अस्मादिष्टदेव मूर्तीभङ्त्वा मन्दिराणि समुन्मूल्य तीर्थस्थानानि पक्वणी कृत्य, पुराणानि पिष्ट्वा, वेद पुस्तकानि विदीर्य च आर्यवंशीयान् वलादयवनीकुर्वन्ति; तेषामेव चरणयोरंजलिं बद्धवा लालाटिकतामंगी कुर्याम् ? एवं चेद् धिक् मां कुलकलंकक्लीबम्। या प्राणभयेन सनातनधर्मद्वेषिणां दासे तां वहेत्। यदि चाहमाहवे म्रियेय, बध्येय, ताडयेय वा तदैव धन्योऽहम् धन्यो च मम पितरौ। कथ्यतां भावदृशां विदुषामत्र कः सम्मतिः ?''

इस प्रकार व्यास जी ने तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का सम्यक् चित्रण किया है। जिससे 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' कि उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है।

संस्कृत गद्य साहित्य में शिवराजविजय की कथा वस्तु

'शिवराजविजय' का कथानक तीन विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार निःश्वास है। संक्षेप में कथानक इस प्रकार है–

दक्षिण में मुसलमानों के आधिपत्य तथा अत्याचारों से खिन्न शिवाजी ने स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष प्रारम्भ किया। उस काल में दो–दो कोस पर आश्रम बने हुए थे, जो मुसलमानों की गतिविधि का परिचय रखते थे। शिवाजी की निरन्तर विजय से उद्विग्न होकर बीजापुर दरबार ने उनसे युद्ध करने के लिये अफजल खाँ को भेजा। उसी समय शिवाजी प्रताप दुर्ग में थे। अफजल खाँ ने भी वहीं भीमा नदी के तट पर शिविर डाल दिया। बीजापुर के शासक सन्धि का धोखा करके शिवाजी को जीवित पकड़ना चाहते थे, उनकी इस अभिसन्धि का शिवाजी को पता लग गया। एक यवन गुप्तचर बीजापुर दरबार का पत्र ले जा रहा था। मार्ग में उसने एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया, किन्तु वह कन्या एक आश्रम में अध्यक्ष– ब्रह्मचारि गुरु के शिष्यों–गौरसिंह और श्यामसिंह द्वारा बचा ली गयी, यवन गुप्तचर गौरसिंह द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्रों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।

इस गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खाँ को छलने की योजना बनाई। बीजापुर के दरबार से सन्धि–प्रस्ताव लेकर भेजे गये, पण्डित गोपीनाथ द्वारा प्रताप दुर्ग की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध किया। गौरसिंह भी गायक के वेश में अफजल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण षड्यन्त्र का भेद निकाल लाया। शिवाजी ने अपनी सेना चारों ओर जंगल में तथा अफजल खाँ के शिविर के आस–पास छिपा दी। प्रातःकाल अफजल खाँ शिवाजी से मिलने आया। शिवाजी अपने कपड़ो के अन्दर कवच और हाथों में बाघनख नाम का हथियार पहनकर गये। परस्पर आलिंगन करने पर शिवाजी ने अफजल खाँ के कन्धों और गर्दन को फाड़कर उसे पटक दिया तथा उनकी सेना ने मुसलमानी सेना को मार कर भगा दिया।

गौरसिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गई थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे। उनके आने पर रहस्योद्घाटन हुआ कि वह कन्या गौरसिंह और श्यामसिंह की बहन सौवर्णी है तथा वृद्ध उनके पुरोहित देव–शर्मा है। तदनन्तर ब्रह्मचारि गुरू के अनुरोध पर गौरसिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया–

वे उदयपुर के एक जागीरदार खड्गसिंह के पुत्र हैं। माता–पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षकता में रहते थे। एक बार शिकार खेलने जाकर दोनों भाई लुटेरों द्वारा पकड़े गये। किसी युक्ति से वे घोड़ों पर चढ़कर भाग निकले और एक हनुमान मन्दिर के अध्यक्ष की सहायता से महाराष्ट्र पहुँचे। यहाँ भीमा नदी के किनारे उनकी शिवाजी से भेंट हुई और वे इस आश्रम में रहने लगे।

शाइस्ता खाँ पूना पर अधिकार करके वहीं शिवाजी के महलों में रहने लगा था। शिवाजी का उससे युद्ध अनिवार्य हो गया। शिवाजी ने सिंह दुर्ग में अपना एक संदेश रघुवीरसिंह द्वारा तोरण दुर्ग के अध्यक्ष के पास भेजा। आँधी–पानी की उपेक्षा करता हुआ वह तोरण दुर्ग पहुँच कर दुर्गाध्यक्ष की आज्ञा से हनुमान मन्दिर में ठहरा। इसी मन्दिर में देवशर्मा सौवर्णी को साथ लेकर रहने लगे थे। मन्दिर की वाटिका में गाना गाती हुई सौवर्णी को देखकर रघुवीर सिंह हृदय में उसके प्रति अनुराग की भावना जागृत हुई। शिवाजी के आदेश के अनुसार रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध के भविष्य को पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया। देवशर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिला कर गले में एक माला डलवाई और प्रातःकाल आकर रात्रि में देखे गये स्वप्न का वृतान्त सुनाने के लिए कहा। प्रातःकाल दुर्गाध्यक्ष से संदेश का उत्तर लेकर वह देवशर्मा के पास गया और यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ युद्ध में पराजय यह भविष्य जानकर वाटिका में गया। वाटिका में उसकी सौवर्णी से पुनः भेंट हुई। तदनन्तर वह हनुमान जी का प्रसाद लेकर सिंह दुर्ग की ओर चल पड़ा।
एक बार शिवाजी पण्डित के वेश में माल्यश्रीक के साथ शाइस्ता खाँ के साथ पूना जाकर गुप्त रूप से वहाँ का निरीक्षण कर आये और संदेह करने पर पीछा

करने वाला चाँद खाँ शिवाजी के द्वारा मारा गया। शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने के लिए अनुरोध करके कुछ चुने हुए साथियों के साथ बारात के बहाने पूना में प्रवेश किया और शाहस्ता खाँ के निवास पर आक्रमण कर दिया, चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये। शाइस्ता खाँ अपनी घायल उँगली के साथ खिड़की से कूदकर बाहर भाग गया। दूसरी ओर इसके पूर्व ही रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री रोशनआरा को गिरफ्तार कर लिया था।

एक समय ब्रह्मचारि गुरु ने गौरसिंह से अपना और अपने पुत्र वीरेन्द्र सिंह का पूर्व वृत्तान्त बताया। उधर रघुवीर सिंह की प्रेयसी सौवर्णी ने क्रूर सिंह द्वारा किये जाने वाले अपने अपमान की बात बताई। तभी संयोगवश क्रूर सिंह की नियुक्ति अन्यत्र हो गई और उसका कष्ट दूर हो गया।

इधर रोशनआरा अपना प्रेम शिवाजी से प्रकट कर रही थी परन्तु उन्होंने कह दिया कि वे उसे पिता द्वारा जाने पर ही स्वीकार कर सकते हैं। तभी जयसिंह ने सैन्य आक्रमण कर दिया। शिवाजी ने उसके मन में हिन्दुत्व की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया परन्तु असफल रहने पर कुछ कारणों से उसने मुगलों की कुछ शर्ते मानकर सन्धि करने को विवश हुए। इसी सन्धि के अनुसार रोशनआरा और मुअज्जम को वापस कर दिया।उसके बाद बीजापुर के एक किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह को सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की और रहमत खाँ को जीवित पकड़ लिया। परन्तु रहमत खाँ और क्रूर सिंह द्वारा रघुवीर सिंह को राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी ने उसे निष्कासित कर दिया। बाद में ज्ञात हुआ कि राजद्रोही वास्तव में क्रूरसिंह ही था।

अपमानिक रघुवीर सिंह राधास्वामी का वेश धारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा और सौवर्णी के अपहरण करने की इच्छा वाले क्रूरसिंह का वध कर दिया। जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी 1666 में औरंगजेब के राजदरबार दिल्ली में उपस्थित हुए। मार्ग में राधास्वामी (रघुवीर सिंह) के कई बार रोकने का प्रयास करने पर भी शिवाजी नहीं माने। दरबार में उपस्थित होने के बाद औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबन्द करवा दिया और मकान के चारों ओर पहरा लगवा दिया। परन्तु स्वयं की योजना तथा रघुवीर सिंह के सहयोग से शिवाजी अपने साथियों के साथ भाग निकलने में सफल हो गये। बाद में यह जानकर कि राधास्वामी ही रघुवीर सिंह हैं शिवाजी ने क्षमा याचना की।इसके बाद रघुवीर सिंह भी शिवाजी के साथ वापस लौट आता है उसे मण्डलेश्वर पद प्रदान किया गया तथा सौवर्णी के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। शिवाजी ने विवाह में सम्मिलित होकर आशीर्वाद दिया। उधर दूतों ने सूचना दी कि सन्धि में मुगलों को दिये गये सभी किले जीत लिये गये हैं।बाद में शिवाजी सतारा नगरी को राजधानी बनाकर रहने लगे और धीरे–धीरे कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण महाराष्ट्र पर शिवाजी का अधिकार हो गया तथा औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति मोहब्बत खाँ भगा दिया गया।

शिवराजविजय की ऐतिहासिकता

आधुनिक समालोचकों की दृष्टि में ''शिवराजविजय'' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। वर्तमान समय में उपन्यास एक वह साहित्य विधा है, जो संसार के प्रायः सभी देशों में प्रचलित है। संसार के प्रायः सभी विद्वानों ने इसे मानव जीवन की अभिव्यक्ति स्वीकार किया है जिसमें मनुष्य जीवन के रहस्यों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। उपन्यासों में भी अनेक विधाएँ हैं, जिनमें ऐतिहासिक उपन्यास अधिक लोकप्रिय है।उपन्यासकार जब ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर अपने कथानक का निर्माण करता है तब वह ऐतिहासिक उपन्यास कहलाता है। इसमें काल विशेष से सम्बन्धित घटनाओं के साथ काल्पनिक घटनाओं का भी समावेश हो सकता है। कवि तद्युगीन

देश–काल को ध्यान में रखकर ऐतिहासिक पात्रों के साथ कुछ सीमा में काल्पनिक पात्रों को भी रख सकता है। यद्यपि ऐतिहासिक उपन्यास में कल्पना का भी समावेश होता है तथापि उसमें प्रमुख तथ्यों की उपेक्षा नहीं की जाती है। इसके साथ ही इसमें कवि अपने व्यक्तित्व को विशिष्ट कल्पनाओं से भूतकाल की चरित गाथाओं, सामाजिक व्यवहार और परम्पराओं को इस प्रकार से जीवित करता हैं कि उनको पढ़कर पाठक का हृदय प्राचीन गौरव से अनुप्राणित हो जाता है। इस प्रकार प्रेमचन्द के अनुसार ऐतिहासिक उपन्यास में संसार की प्रत्येक वस्तु, प्रकृति का प्रत्येक रहस्य, जीवन का हर एक पहलू विषय बनाया जा सकता है और इसका महत्व तथा गहराई उपन्यास के सफल होने में सहायक होते हैं।

भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ही ऐतिहासिक कथाएँ लिखी जाती रही है। संस्कृत में प्रायः अधिकांश महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा नाटयकाव्य भी ऐतिहासिक कथाओं के आधार पर लिखे गये हैं परन्तु वर्णन की प्रधानता; आदर्श की प्रतिष्ठा तथा कल्पना के अतिरेक के कारण उन्हें ऐतिहासिक काव्य नहीं कहा जा सकता है, इनमें से प्रमुख हैं–राजतरंगिणी, विक्रमांकदेवचरित, नवसाहसांकचरित, पृथ्वीराजविजय तथा हर्षचरित आदि।संस्कृत भाषा में प्राचीनकाल से कथा साहित्य की अनेक विधाएँ प्रचलित हैं। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित गद्यकाव्य को आख्यायिका कहा जाता था। परन्तु यथार्थवादी दृष्टि से औपन्यासिक कला का प्रचलन आधुनिक युग की देन है।

संस्कृत भाषा में 18 वीं सदीं उपन्यास–विधा की काव्य–रचना का प्रारम्भ नहीं हुआ था। इस नवीन, मनोरम तथा चमत्कारी मार्ग की ओर संस्कृतज्ञों की प्रवृति न होने देखकर व्यास जी संस्कृत साहित्य की इस दुर्बलता को दूर करने के लिए प्रवृत्त हुए और महाराष्ट्र केसरी वीर शिवाजी के चरित पर आधारित इस ऐतिहासिक उपन्यास की रचना करके संस्कृत साहित्य में एक नवीन काव्य–विधा का सूत्रपात किया। व्यास जी की 'गद्यकाव्य' मीमांसा भाषा' के अध्ययन से विदित होता है कि वे यूरोपीय सम्पर्क से प्रोत्साहित बंगला उपन्यासों की शैली से प्रभावित थे। उन्नीसवीं सदी में भारतीय जनता में सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण हुआ। पराधीनता और जातीय गौरव के विनाश ने निश्चित रूप से व्यास जी को विह्वल किया होगा। और उस समय स्वातन्त्र्य तथा जातीय गौरव का सन्देश देने वाले महाराष्ट्र जीवन प्रभात, राजसिंह तथा आनन्दमठ आदि उपन्यासों का अनुसरण करते हुए उन्होंने संस्कृत भाषा में ऐतिहासिक उपन्यास की रचना करके भारतीय जनता को जातीय एंव राष्ट्रीय गौरव का सन्देश दिया। कुछ आलोचकों ने कल्पना और इतिहास की विभाजक रेखा की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यासों के चार प्रकार माने हैं–

1. पूर्ण प्रामणिक तथा साहित्य से ओत–प्रोत।
2. ऐतिहासिक वातावरण से युक्त तथा कल्पित पात्र और घटनाओं से युक्त।
3. ऐतिहासिक पात्रों से युक्त किन्तु कल्पित घटनाओं से ओत–प्रोत।
4. ऐतिहासिक घटनाओं के सत्य का निदर्शन करने वाले।

उक्त विभाजन के अनुसार 'शिवराजविजय' को प्रथम श्रेणी का उपन्यास माना जा सकता है। इस श्रेणी के उपन्यास में इतिहास और कल्पना का समन्वय लेखक को करना होता है। शिवराजविजय में न तो कल्पना द्वारा इतिहास को विकृत किया गया है और न ही ऐतिहासिक यथार्थ के बाहुल्य से इसे नीरस अथवा घटना का द्योतक बनाया गया है। इस उपन्यास में लेखक ने ऐतिहासिक यथार्थता और कल्पना का इस प्रकार सम्मिश्रित चित्रण किया है कि दोनों को अलग–अलग पहिचानना कठिन है। इसमें ऐतिहासिक तथा कल्पित दोनों पात्रों का चरित देश काल के अनुरूप ही है। इसकी सभी प्रमुख घटनाएँ भी ऐतिहासिक तथा वास्तविक हैं। इस प्रकार इस उपन्यास की ऐतिहासिकता की समीक्षा हम – 1. पात्र–योजना, 2. चरित्र–चित्रण तथा 3. घटनाओं

के वर्णन के आधार पर कर सकते हैं।

2.घटनाओं की दृष्टि शिवराजविजय की ऐतिहासकिता – शिवराजविजय में वर्णित अधिकांश घटनाएँ शिवाजी से सम्बद्ध है क्योंकि कथा के फल के अधिकारी प्रमुख पात्र हैं। इसकी कथा अफजल खाँ के पराजय से प्रारम्भ होकर है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख घटनाएँ ऐसी हैं, जिसका स्रोत ऐतिहासिक है –

1. शिवाजी का अफजल खाँ से युद्ध।
2. शाइस्ता खाँ के पूना निवास पर शिवाजी द्वारा आक्रमण।
3. शिवाजी और भूषण कवि।
4. शिवाजी और शहजादा मुअज्जम।
5. शिवाजी द्वारा सूरत नगर की विजय।
6. शिवाजी और जयसिंह का संघर्ष तथा सन्धि।
7. शिवाजी की औरंगजेब के दरबार में उपस्थिति।
8. शिवाजी का महाराष्ट्र वापिस आना तथा सम्पूर्ण महाराष्ट्र को स्वतन्त्र करना।

1. शिवाजी और अफजल खाँ का युद्ध हुआ और अफजल खाँ मारा गया। यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसका उल्लेख सभी इतिहासकारों ने किया है। ग्रान्ट डफ के अनुसार सन्धि के ब्याज के कपटपूर्ण ढंग से शिवाजी ने अफजल खाँ पर आक्रमण किया और वह विश्वासघात का शिकार हुआ। परन्तु अब शिवराजविजय के वर्णन के अनुरूप ही 'बीजापुर नरेश' द्वारा शिवाजी को धोखे से पकड़ने का षड्यन्त्र किया था– यह सिद्ध हो चुका है। साथ ही नवीन गवेषणाओं ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि प्रथम आक्रमण अफजल खाँ ने ही किया था तब शिवाजी ने अपने गुप्त शस्त्रों से उसे मार डाला।

2. शिवाजी ने शाइस्त खाँ के पूना निवास पर आक्रमण किया। ग्रान्ट डफ के अनुसार शाइस्ता खाँ मराठों की दुर्ग युद्ध की विभीषिका से पूना में किसी भी व्यक्ति का प्रवेश रोकने का प्रबन्ध किया था। तब शिवाजी ने बारात के माध्यम से पूना में प्रवेश की अनुमति प्राप्त करके 25 सैनिकों के साथ प्रवेश किया। मराठे सैनिकों ने पीछे की दीवार तोड़कर अन्दर किले में प्रवेश किया। जब इसकी जानकारी स्त्रियों द्वारा शाइस्ता खाँ को हुई तब वह खिड़की से निकल कर भागा परन्तु खड्ग के प्रहार से उसकी उँगली कट गई। फिर भी वह भाग गया परन्तु उसका पुत्र और अनेक रक्षक मारे गये। शिवाजी सैनिकों के साथ निर्विध्न बाहर निकल आये और पूना से 2–4 मील दूर मसालें जलाकर सिंह दुर्ग में प्रविष्ट हो गये। एक ऐतिहासिक घटना है और इसी रूप में व्यास जी ने भी इसका वर्णन किया है। कुछ इतिहासकारों ने इस घटना के कुछ अन्य रूप में वर्णित किया है।

3. शिवाजी और भूषण कवि का मिलन एक किंवदन्ती के अनुसार बतलाया जाता है। यद्यपि इन दोनों के समकालीन होने पर कुछ इतिहासकार सन्देह करते हैं परन्तु शिवराजविजय तथा कुछ ऐतिहासिक साक्ष्य के अनुसार उनका समकालीन होना सिद्ध होता है।

4. इतिहास के अनुसार मुअज्जम ने जनवरी 1664 में शाइस्ता खाँ का स्थान ग्रहण किया था। शिवराजविजय के अनुसार मुअज्जम को शिवाजी के सैनिक कैद कर लेते हैं। परन्तु इतिहास के अनुसार उसके कैद की पुष्टि नहीं होती है।

5. इतिहास के अनुसार 5 जनवरी 1664 को शिवाजी ने स्वयं सेना लेकर सूरत नगर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया था। परन्तु व्यास जी ने सूरत नगर को जीतने के लिये शिवाजी को न भेजकर सेनापति धीरेन्द्र सिंह को भेजा है।

6. इतिहास के अनुसार 30 सितम्बर 1664 को औरंगजेब ने जयसिंह और

7. दिलेर खाँ को शिवाजी के दबाने के लिये भेजा था। युद्ध में शिवाजी पराजित हुये और उनकी अनेक शर्ते स्वीकार की तथा औरंगजेब के दरबार में जाने को सहमत हुए। जयसिंह के साथ इस संघर्ष और सन्धि की घटना को व्यास जी ने कुछ परिवर्तन करके लिखा है। इसमें युद्ध का वर्णन नहीं है तथा जयसिंह से पराजय की दुर्बलता को भी छिपाने के लिए देवशर्मा की भविष्यवाणी द्वारा ढकने का प्रयास किया गया है।

8. ग्रान्ट डफ के अनुसार शिवाजी पाँच सौ घुड़सवारों तथा एक हजार पदातियों के साथ दिल्ली जाकर औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए। कुछ इतिहासकारों ने दिल्ली जाने को न लिखकर, आगरा जाने का उल्लेख किया है और शिवाजी ने वहीं मुगल सम्राट से भेंट की।

9. औरंगजेब की कैद से वापस लौटने के बाद शिवाजी की उपस्थिति प्रताप दुर्ग में दिखाई गई है परन्तु इतिहास के अनुसार वे रायगढ़ में प्रकट हुए थे। कुछ इतिहासकारों के अनुसार शिवाजी ने दक्षिण पहुँचकर मुगलों को दिये हुए सभी किलों को जीत लिया। शिवराजविजय में भी ऐसा ही वर्णन है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार उन्होंने 3 वर्ष तक पुरन्दर सन्धि का पालन किया उसके बाद युद्ध करके सभी किले जीते। इसी प्रकार जयसिंह की कारुणिक मृत्यु, मोहब्बत खाँ का मराठों द्वारा हराया जाना आदि व्यास जी द्वारा वर्णित घटनाएँ ऐतिहासिक ही हैं।

इस प्रकार शिवराजविजय में वर्णित अधिकांश प्रमुख घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। यत्र–तत्र लेखक ने साहित्यिक आवश्यकता तथा नेतृगत एवं प्रतिनेतृगत चरित्रों की संगीत के लिये ऐतिहासिक कथा में परिवर्तन किया है, फिर भी इसकी ऐतिहासिकता पर आघात नहीं हुआ है।

1. **चरित्र की दृष्टि से शिवराजविजय की ऐतिहासिकता** – जैसा कहा गया है कि शिवराजविजय में ऐतिहासिक और काल्पनिक दोनों प्रकार के पात्र हैं। ऐतिहासिक पात्रों में शिवाजी, जयसिंह, औरंगजेब आदि पात्रों का चरित्र इतिहास के अनुरूप ही चित्रित किया गया है। कुछ ऐतिहासिक पात्र ऐसे भी हैं, जिनके चरित्रों को कवि ने बहुत कुछ अंशो में काल्पनिक रूप में चित्रित किया है। इसी सन्दर्भ में यह भी कहना अनुचित न होगा कि व्यास जी ने काल्पनिक पात्रों को भी ऐतिहासिक चरित्रों के साथ इतना मिला दिया है कि वे भी ऐतिहासिक ही प्रतीत होते हैं।

अस्तु, शिवराजविजय एक ऐसा काव्य है जिसमें साहित्यिक कलात्मकता के आधान के बाद भी ऐतिहासिकता अक्षुण्ण है। भारतीय काव्यशात्र के अनुसार ऐतिहासिक काव्य में ऐतिहासिक तत्व केवल इतिवृत्त के निर्वाह–मात्र के लिये नहीं होते, अपितु वे कथा के रस अथवा भावों के अनुकूल होते हैं। कवि की कल्पना इतिहास की मर्यादा को भंग नहीं करती, अपितु इतिहास–गत मुख्य कथानक से एक रूप हो जाती है। व्यास जी ने अपने इस ऐतिहासिक उपन्यास में मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया है।

शिवराजविजय की औपन्यासिकता – संस्कृत साहित्य में कथा–आख्यायिका आदि विविध रूपों में गद्यकाव्य लिखे जाते रहे हैं जो कि कृष्णमाचार्य के अनुसार एक ही जाति के दो नाम हैं। संस्कृत में व्यास जी से पूर्व उपन्यास का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था यद्यपि नाटयशास्त्र आदि में उपन्यास शब्द का प्रयोग अवश्य मिलता है परन्तु इस अर्थ के लिये उसका प्रयोग नहीं हुआ – ''वज्रम् पुष्पमुपन्यासः वर्णसंहार इत्यादि।'' (दशरूपक) इस नवीन (काव्य विधा) उपन्यास शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम बंगला साहित्य में हुआ और उसी से हिन्दी में भी इसका प्रचलन हुआ।

पं0 अम्बिकादत्त व्यास संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के विद्वान् थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से उनका घनिष्ठ सम्पर्क था। सम्भवतः उन्हीं से उपन्यास लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई होगी। व्यास जी की 'गद्यकाव्य मीमांसा भाषा' से यह प्रतीत होता है कि

संस्कृत में उपन्यास के अभाव से वे दुःखी थे और उसकी पूर्ति हेतु 'शिवराजविजय' की रचना में प्रवृत्त हुए। इस प्रकार संस्कृत साहित्य की गद्य परम्परा में शिवराजविजय एक नवीन एवं आधुनिक काव्य–विधा होने के कारण उन्हीं मानदण्डों के अनुसार इसकी आलोचना भी संगत होगी। आधुनिक समालोचनात्मक दृष्टि से उपन्यास के 6 तत्व माने गये हैं – 1. कथानक, 2. संवाद, 3. रचना–शैली 4. चरित्र–चित्रण, 5. देशकाल और 6. उद्देश्य। इन्हीं तत्वों के आधार पर शिवराजविजय की समीक्षा प्रस्तुत है।

कथानक – कथानक उपन्यास का आधारस्तम्भ है। अन्य तत्व इसी के आश्रित होते हैं। व्यास जी ने अपनी काव्य–रचना के लिये ऐसी कथा का चयन किया जो भारतीय हिन्दू जन के लिये अत्यन्त हृदयग्राही था और उसके नायक शिवाजी देश, जाति एवं धर्म के उद्धारक के रूप में समादृत थे। व्यास जी ने प्राचीन गद्यकाव्य की परम्पराओं से कुछ अलग हटकर अपनी कथावस्तु की योजना की। शिवराजविजय का कथानक शिवाजी के ऐतिहासिक रूप को उपस्थित करने में समर्थ है। इसमें प्रासंगिक कथा के नायक रघुवीर सिंह का भी चरित्र कम विकसित नहीं है। जहाँ प्राचीन गद्यकाव्यों में कथानक की यथार्थता पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था वहीं व्यास जी की प्रवृत्ति इससे भिन्न है। इसमें उन्होंने आधुनिक उपन्यास कला के अनुसार यथार्थता का पर्याप्त समावेश किया है। कथानक की दूसरी विशेषता होती है उसकी साकांक्षता एवं सम्प्रेषणीयता जिसका उपन्यास में विशेष महत्व है। व्यास जी ने इसकी ओर विशेष ध्यान दिया है। कहीं पर भी अनावश्यक विशेषणों तथा वर्णनों की भरमार से कथा–गति को शिथिल नहीं होने दिया है।

व्यास जी शिवराजविजय की कथा का प्रारम्भ ही बिल्कुल नये ढंग से किया है जो प्राचीन परम्पराओं से भिन्न है। सूर्योदय होने पर एक ब्राह्मण बटु कुटी से बाहर निकलकर पूजा के लिये फूलों का चयन प्रारम्भ करता है। काव्य की समाप्ति अवश्य कुछ प्राचीन मार्ग पर ही आधृत प्रतीत होती है।शिवराजविजय का कथानक संगठित घटनात्मक की अपेक्षा शिथिल कथनात्मक ही अधिक है क्योंकि इसकी प्रत्येक घटनाएँ एक दूसरे का परिणाम न होकर स्वतन्त्र हैं। गौरसिंह का वृत्तान्त, वीरेन्द्र सिंह की कथा, रघुवीरसिंह और सौवर्णी की प्रेम–गाथा आदि पृथक्–पृथक् घटनाएँ हैं। लेखक ने उन्हें एक सूत्र में पिरोकर साकांक्ष बना दिया है।अस्तु कथानक की दृष्टि से शिवराजविजय संस्कृत जगत् से हट कर आधुनिकता का परिवेश लिये हुए संस्कृत जगत् में अवतरित हुआ है। व्यास जी ने बड़ी कुशलता के साथ काव्यात्मकता का पुट देकर भी उसकी ऐतिहासिकता को अक्षुण्ण रखा।

रचना–शैली – व्यास जी ने शिवराजविजय में गद्य की प्राचीन परम्पराओं का पालन करते हुए उसकी अतिशयता से बचने की चेष्टा की है। वैदर्भी रीति का आश्रय लेते हुय अधिक समासों से उपन्यास का क्लिष्ट नहीं बनाया है। अलंकारों का भी प्रयोग उचित मात्रा में करके उससे काव्य को बोझिल नहीं बनाया है। कहीं–कहीं पर नाटकीय मोड़ से उपन्यास को अत्यधिक मार्मिक एवं हृद्य बना दिया। जयसिंह द्वारा शिवाजी के सैनिकों को पारितोषिक दिये जाते समय रघुवीर का अपमानित किया जाना, आगरे में शिवाजी की कृत्रिम रुग्णता के अवसर पर मुरेश्वर का यवन चिकित्सक के रूप में आना आदि भावनात्मक घटनाओं के नाटकीय दृश्य शिवराजविजय की विशेषताएँ हैं।

उद्देश्य – संस्कृत काव्यशास्त्र के अनुसार ये 6 उद्देश्य माने गये हैं –यशः प्राप्ति, धनप्राप्ति, व्यवहार–ज्ञान, दुःख–विनाश, आनन्द प्राप्ति तथा उपदेश। प्रायः इन्हीं उद्देश्यों के लिये काव्यों की रचना की जाती थी। काव्य–रचना उद्देश्य की दृष्टि से भी व्यास जी के शिवराजविजय में कुछ नवीनता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने परम्परागत प्रयोजनों को रखते हुए भी देश, जाति और धर्म के गौरव की प्रतिष्ठा और इससे जनमानस को आप्लावित करना अपना मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया– ''परं मया तु सनातन धर्मधूर्वह

शिवराजवर्णनेन रशना पावितैव, प्रसंगतः सदुपदेश निर्देशैः स्वब्राह्मण्यं सफलितमेव, ऐतिहासिक काव्य रुचीनि स्वमित्राणि रंजितान्येव ....''व्यास जी का दूसरा उद्देश्य यह रहा कि संस्कृत साहित्य में नवीन, मनोरम तथा चमत्कारपूर्ण मार्गों का आधान किया जाय। व्यास जी अपनी सशक्त लेखनी से शिवराजविजय उपन्यास विधा को स्रावित करके अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफल हुए हैं।

व्यास और बाण की तुलनात्मक समीक्षा

कोई भी कवि या लेखक अपने पूर्ववर्ती साहित्यिक प्रवृत्तियों से बिल्कुल अछूता नहीं रह सकता है। व्यास जी के पूर्ववर्ती गद्यकारों में तीन प्रमुख थे– बाण, दण्डी और सुबन्धु। इन तीन गद्यकारों में बाण और सुबन्धु की रचना और भाव के चित्रण की शैली लगभग एक–सी रही है परन्तु दण्डी की भाषा–शैली तथा भावाभिव्यंजना दोनों ही पृथक् रही है। इन दोनों परम्पराओं के रहते हुए भी आधुनिकता से प्रभावित पं0 अम्बिकादत्त व्यास ने कुछ–कुछ अंशों में उक्त दोनों गद्य परम्पराओं का अनुकरण किया तथा कुछ अंशों में अपने उपन्यास को आधुनिक औपन्यासिक तत्वों से सजा कर एक नवीन विधा के रूप में प्रस्तुत किया। अतः शिवराजविजय को बाण और दण्डी के काव्यात्मक मानदण्डों तथा आधुनिक मानदण्डों का एक सम्मिश्रित रूप कहा जा सकता है। शिवराजविजय के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि शिवराज पर बाण की काव्य–शैली का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इसलिए समालोचकों ने व्यास जी को अभिनव बाण 'व्यासस्त्वभिनवो बाणः' कहकर उनकी प्रतिभा और काव्य–शैली का उचित मूल्यांकन किया है। यह सच कि अलंकृत गद्य–काव्य–परम्परा में बाण के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में व्यास जी को ही माना जा सकता है।

बाण और व्यास की संक्षिप्त तुलना इस प्रकार है

बाण ने अनेकों ग्रन्थों की रचना की परन्तु अलंकृत गद्य शैली के प्रतीक कादम्बरी और हर्षचरित ही उनकी अमर कृतियाँ मानी जाती हैं। व्यास जी ने कुल तो लगभग 78 ग्रन्थों का प्रणयन किया है, परन्तु शिवराजविजय एकमात्र ऐसी कृति है जो उनकी यशोगाथा को विकसित करने वाली है। अतः इनकी तुलना करते हुए हम कह सकते हैं कि –

1. **कथानक** – हर्षचरित की कथा ऐतिहासिक है, कादम्बरी की कल्पित। इन दोनों कथानकों का समाहार करते हुए हर्षचरित के आधार पर व्यास जी ने हर्षवर्धन की भाँति महाराष्ट्र–केसरी वीर शिवाजी के ऐतिहासिक कथा को स्वीकार किया और कादम्बरी की प्रेमगाथा के अनुरूप सौवर्णी की प्रणय–कथा की कल्पना की। हर्षचरित की ऐतिहासिक कथा का संघटनात्मक कथानक है, शिवराजविजय की कथा का शिथिल कथनात्मक है। कादम्बरी में वर्णनों और विशेषणों के आधिक्य से कथा की गति मन्द पड़ जाती है परन्तु व्यास जी की कथा ऐसी नहीं है। कथा के संयोजन में दोनों लेखकों ने संश्लिष्टात्मकता पर विशेष ध्यान दिया है। बाण का कथानक परम्परावादी दृष्टिकोण से वर्णित है परन्तु व्यास जी के कथानक में नवीनता का प्रयोग है।

पात्र – बाण के पात्र ऐतिहासिक एवं कल्पित दोनों हैं। व्यास जी ने भी दोनों प्रकार के पात्रों की योजना की है। बाण के पात्रों में अतिशयता और अतिमानवीयता का आधार है परन्तु व्यास जी के पात्र इससे रहित हैं। वे यथार्थ के धरातल पर स्थित है। पात्रों के चरित्र–चित्रण में बाण का दृष्टिकोण आदर्शवादी अधिक और यथार्थवादी कम है। व्यास का दृष्टिकोण यथार्थवादी अधिक तथा आदर्शवादी कम है।

रचना शैली – बाण की भाषा शैली आलंकारिक, समासबहुल तथा जटिल पदविन्यासात्मिका है। व्यास जी की भाषा शैली भी आलंकारिक है परन्तु अलंकारों का प्रयोग उचित मात्रा में किया गया है। अधिक लम्बे समास नहीं हैं, पर विन्यास सरल

है। नूतन शब्दों का प्रयोग भी व्यास जी ने बाण की अपेक्षा कम किया है। बाण के काव्य में विभिन्न शैलियों तथा रीतियों का निदर्शन होता है और यह विशेषता व्यास जी के काव्य में भी विद्यमान है किन्तु बाण के जितनी दक्षता और प्रौढ़ता इनके काव्य में नहीं है। बाण के काव्य में पाण्डित्य–प्रदर्शन की भावना का अभाव है। समग्र दृष्टि से बाण के काव्य में काल्पनिक चमत्कार और भावों के विशद वर्णन के लिए प्रयुक्त भाषा में जटिलता और दुरूहता है इसलिए तो बाण के काव्य को नारिकेलफल सम्मितम् वचः कहा गया है। परन्तु व्यास जी के काव्यों में इस प्रकार की जटिलता नहीं है। उनकी भाषा बड़ी ही सुबोध तथा प्रवाहमयी है। इसी दृष्टि से डा0 भगवानदास ने लिखा है – ''......वासवदत्ता और कादम्बरी के शब्दों की अरण्यानी में तो बेचारा अर्थपथिक सर्वथा भूल भटक कर खो जाता है, उसका पता नहीं लगता। कविता के गुणों में प्रसाद गुण एक मुख्य गुण है; वह इन दो काव्याभासों में मिलता नहीं– विपरीत इसके 'शिवराजविजय' में भाषा उत्तमोत्तम ओजस्विनी भी, अर्थपूर्ण भी, सुबोध्य भी, यथास्थान, यथावसर उद्दाम भी, कोमल भी है।''

विविध वर्णन – महाकवि बाण पृथ्वी से आकाश तक के वर्णन के लिए प्रसिद्ध हैं। भावतत्व हो या वस्तु, बाण की लेखनी से अछूता नहीं रह गया है। इसी दृष्टि से 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्–'' की उक्ति प्रसिद्ध है। व्यास जी विविध वर्णनों के चक्कर में उतना नहीं पड़ते हैं। कथानक की यथार्थता को प्रदर्शित करने के लिए जितना अपेक्षित होता है, उतना ही वर्णन करते हैं।

प्राकृतिक चित्रण भी बाण बड़ी विशदता के साथ करते हैं। पहाड़ हो या नदी, जंगल हो या सरोवर, पशु हो या पक्षी, सभी का चित्रण बड़ी सूक्ष्मता के साथ करते हैं। प्राकृतिक चित्रण व्यास जी ने भी किया है, परन्तु उनके चित्रण की इतनी विशदता तथा सूक्ष्मता नहीं है । बाण और व्यास दोनों ने प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों पक्षों का चित्रण किया है।

जीवन के गहन अनुभवों की जितनी मार्मिक अभिव्यंजना बाण ने की है, उतनी व्यास जी नहीं कर सके हैं। सौन्दर्य और प्रेम की जैसी जीवन्त प्रतिमाएँ कादम्बरी और महाश्वेता हैं। वैसी सौवर्णी और रोशनआरा नहीं हैं। चन्दापीड जैसा प्रेमी शिवराजविजय में कोई नहीं है। फिर भी प्रणय की उदार भावना की अभिव्यंजना दोनों में समान रूप से की है।बाण ने अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षिणी शक्ति, कल्पना और ज्ञान से मानवीय भावों और प्रवृत्तियों के विशद चित्रण में, विविध वस्तुओं के प्रतीक प्रकाशन में तथा सिद्धान्तों के सुस्पष्ट प्रतिपादन में अत्यन्त सफल और सिद्धहस्त हैं। यद्यपि ऐसा प्रयास व्यास जी ने भी किया है और बहुत अंशों में सफल हुए हैं, परन्तु बाण की समानता नहीं कर सके हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि व्यास बाण के अनुगामी है। उनकी बहुत सी परम्परागत विशेषताओं का अनुकरण करके अपने काव्य को अलंकृत किया है। जहाँ तक कलावादिता के प्रत्येक क्षेत्र में व्यास को बाण से पीछे रह जाने की बात है उसका एक कारण यह भी है कि व्यास जी शुद्ध रूप से केवल बाण अनुगामी नहीं रहे हैं अपितु उपन्यास की आधुनिक प्रवृत्तियों को विशेष रूप से ध्यान में रखकर काव्य लिख रहे थे। अतः दोनों के दृष्टिकोण में भी अन्तर था।

दण्डी और व्यास की तुलनात्मक समीक्षा – महाकवि दण्डी के दो गद्यकाव्य माने जाते हैं– 1. अवन्तिसुन्दरीकथा और 2. दशकुमारचरित। अवन्तिसुन्दरी कथा के अपूर्ण तथा सन्देहास्पद होने के कारण उनकी काव्य शैली का मापदण्ड दशकुमारचरित ही माना जाता है। इसमें दस राजकुमार अपने–अपने पर्यटनों, अनुभवों तथा पराक्रमों का मनोहारी वर्णन करते हैं। इसमे झूठ, कपट, चोरी, जुआ, मार–काट की भरमार है। सभी राजकुमार उचित–अनुचित का विचार छोड़कर अपनी कार्यसिद्धि के लिये प्रयास

करते हैं। सम्भवतः इसीलिए चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा शान्तिकुमार आदि इसे धूर्तों का रोमांस मानते हैं। दण्डी का दशकुमारचरित छठीं शताब्दी के भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण करने में समर्थ हुआ है। इसमें समाज के दोषों को बड़ी निर्ममता के साथ अनावृत्त किया गया है। वस्तुतः दशकुमारचरित का कथानक अपने ढंग का एक अनोखा कथानक है। इसकी कथा आदर्श की अपेक्षा यथार्थ पर आधारित है।

महाकवि दण्डी पण्डित मण्डली के बीच में होते हुए भी, कलावादियों के प्रभाव से प्रभावित रहते हुए भी तथा रूढ़ीवादी प्रवृत्तियों में पलते हुए भी इनसे मुक्त रहकर स्वतन्त्र विचारधारा और चिन्तन के अनुरूप उन्होंने परम्परागत मार्ग से हटकर एक विचित्र ढंग की योजना की, जिसके पात्र आदर्श चरित न होकर यथार्थ के उद्धाता कहे जा सकते हैं और कथानक के चित्रण में अवान्तर कथाओं के द्वारा किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं किया गया है और न ही भाषा की जटिलता, पाण्डित्य प्रदर्शन तथा काल्पनिक चमत्कारों से किसी प्रकार की दुर्बोधता का आधान हुआ है। बाण, दण्डी तथा सुबन्धु की विवेचना करते हुए डॉ0 भोला शंकर व्यास कहते हैं – ''सुबन्धु और बाण का खास ध्यान परिश्रम साध्य रीति की ओर अधिक है, पर दण्डी का ध्यान केवल अभिव्यंजना पक्ष की ओर नहीं है, वे कथा के विषय को कम महत्व नहीं देते। सुबन्धु ने एक छोटी–सी कहानी लेकर कला का आलवाल खड़ा कर दिया है, पर दण्डी के पास विषय की कमी नहीं है और उनकी अभिव्यंजना–शैली इतनी गठी हुई है कि वह विषय को लेकर आगे बढ़ती है। सुबन्धु और बाण दोनों ही कवियों की रीति पक्ष बड़ी तेजी से, बड़ी सज–धज से आगे बढ़ता है और विषय पीछे घसिटता रहता है, दोनों कदम–व–कदम मिलाकर चलते नहीं दिखाई देते। दण्डी के 'दशकुमारचरित' में कथा या विषय की परिणति नहीं देखी जाती है। ''वे सरल प्रवाहमय भाषा के सिद्ध प्रयोक्त है, संवाद सूक्ष्म और तात्विक होते हैं। शाब्दी या आर्थी क्रीड़ा के फेर में अधिक नहीं पड़ते।''

दण्डी की उपर्युक्त विशेषताएँ व्यास जी के शिवराजविजय में भी पाई जाती हैं। दण्डी और व्यास के काव्यात्मक दृष्टिकोण में पर्याप्त साम्य है यदि इन दोनों में अन्तर है तो केवल इतना कि व्यास जी ने ऐसे कथानक को अपने काव्य का आधार बनाया है जो ऐतिहासिक है, उत्कृष्ट चरित्रयुक्त है, अनुकरणीय है यथार्थ होते हुए भी आदर्श का प्रेरक है परन्तु दण्डी का कथातत्व सामाजिक यथार्थता से युक्त होते हुए भी न तो अनुकरणीय है, न उत्कृष्ट है न ही आदर्श का प्रेरक है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि दण्डी के कथानक में सत्यम् और सुन्दरम् के होते हुए भी शिवम् का पोषण नहीं हो पाया है। जब कि व्यास जी सत्यम्, शिवम् सुन्दरम् का पूर्ण पोषक है शिवराजविजय और दशकुमारचरित दोनों में ही भिन्न–भिन्न घटनाओं को परस्पर सम्बद्ध करके एक सूत्र में पिरोया गया है।रचना शैली की दृष्टि से दण्डी और व्यास में पर्याप्त समानता है। दण्डी के समान ही व्यास जी की भी शैली सरस एवं प्रभावपूर्ण है। लम्बे–लम्बे समासों वाली, श्लेष और उत्प्रेक्षाओं से भरी, विराधाभास एवं श्लेषमूलक परिसंख्या से विभूषित तथा अलंकारों के भार से बोझिल कवित्व भरी शैली का दण्डी के समान व्यास जी में भी अभाव है।वस्तुतत्व एवं भावतत्व के विविध वर्णन भी व्यास ने दण्डी के समान ही किया है, जो कथा में अवरोधक न होकर पोषक ही है। प्रकृति–चित्रण भी दोनों ने प्रायः समान रूप में ही किया है। दोनों का प्रकृति–चित्रण नातिदीर्घ तथा प्रभावशाली है।कलावादिता की ओर अधिक अभिरूचि न दण्डी की है और न व्यास की ही। शाब्दी और आर्थी क्रीड़ा के प्रति दोनों उदासीन हैं। शिवराजविजय में शाब्दी क्रीडा का नितान्त अभाव है, जब कि दण्डी ने शब्दविन्यास पर अवश्य कुछ ध्यान दिया, तभी तो वे पदलालित्य की योजना कर सके हैं 'दण्डिनः पदलालित्यम्।दण्डी और व्यास दोनों ने ही पात्रों की योजना समान रूप से की है। दोनों के ही पात्र धरती पर रहने वाले

सामाजिक प्राणी है, मानवीय भावनाओं से युक्त हैं, तथा चरितगत यथार्थता से मण्डित हैं।इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि दण्डी और व्यास में जितना साम्य है, उतना बाण और व्यास में नहीं। फिर भी वस्तुतत्व का अन्तर इतना महत्वपूर्ण है कि व्यास को अभिनव दण्डी न कहकर अभिनव बाण ही कहा गया। व्यास को दण्डी का अनुगामी न मानकर बाण का ही अनुगामी माना गया।

अभ्यास प्रश्न 1

1–प्रश्न–'शिवराजविजय' का कथानक कितने विरामों में विभक्त हैं?
2–प्रश्न– प्रत्येक विराम में कितने निःश्वास है?
3–प्रश्न– गौरसिंह द्वारा किसकी रक्षा की गई थी,?
4–प्रश्न– उस कन्या का संरक्षक कौन था?
5–प्रश्न– शिवाजी का विपक्षी हिन्दू राजा कौन था?

1.4 सारांश

इस इकाई में शिवराजविजय के प्राचीन गद्यकाव्यों में अथवा सम्पूर्ण श्रव्य काव्य में संवाद–योजना का कोई महत्व नहीं था। काव्यशास्त्रियों ने भी संवाद को काव्य के आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार नहीं किया है। परन्तु आधुनिक युग में उपन्यास आदि में संवादों का विशेष महत्व स्वीकार किया गया है। अम्बिकादत्त व्यास के अनुसार संवाद उपन्यास के सर्वाधिक आनन्दमयी तत्त्वों में से एक है।व्यास जी ने शिवराजविजय में नाटकीय एवं प्रभावशाली संवादों की योजना करके संस्कृत–गद्य–काव्य के लिये एक नई दिशा प्रदान की। संन्यासी (गौरसिंह) तथा द्वारपाल (प्रहरी) के संवाद तथा तानरंग (गौरसिंह) एवं अफजल खाँ के संवाद अत्यन्त नाटकीय एवं रोचक हैं। शिवराजविजय के संवाद अत्यन्त स्वाभाविक एवं चरित्रों के अनुकूल हैं।इन सभी विषयों का वर्णन इस इकाई में किया गया है।

1.5 शब्दावली

शब्द	अर्थ
मन्दिराणि	मन्दिरों को
तीर्थस्थानानि	तीर्थ स्थानों को
पुराणानि	पुराणों को
पिष्ट्वा,	पीसकर
वेद पुस्तकानि	वेद पुस्तकों को
विदीर्य	फाड़कर

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. तीन विरामों 2. चार निःश्वास 3.ब्राह्मण कन्या की 4. वृद्ध ब्राह्मण 5. राजा जयसिंह

1.7 सदर्भ ग्रन्थ सूची

1–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
शिवराजविजय	अम्बिकादत्तव्यास	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी
2–संस्कृत साहित्य का इतिहास .	बलदेव उपाध्याय	**प्रकाशक** शारदा निकेतन वी, कस्तूरवानगर

सिगरा वाराणसी

1. 8 उपयोगी पुस्तकें

1–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
शिवराजविजय	अम्बिकादत्तव्यास	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

1. 9 निबन्धात्मक प्रश्न

1– पं0 अम्बिकादत्त व्यास के विषय में विस्तार से परिचय दीजिये ।